संत श्री आशारामजी आश्रम द्वारा प्रकाशित

ऋषि प्रसाद

मूल्य : ₹ ७ भाषा : हिन्दी
प्रकाशन दिनांक : १ मई २०२३
वर्ष : ३२ अंक : ११ (निरंतर अंक : ३६५)
पृष्ठ संख्या : ३६ (आवरण पृष्ठ सहित)

पूज्य संत
श्री आशारामजी बापू

आप भी ऐसे नर-रत्न बन सकते हो

पृष्ठ २४

एक बच्चा भी ठान ले न, तो दुनिया को हिलाने की शक्ति उसमें छुपी है । हमारे गुरुजी भगवत्पाद लीलाशाहजी बापू ने बचपन में परमात्मप्राप्ति का ठान लिया तो दुनियादारों का कितना भला कर दिया ! आप ठान लो कि 'हम तो भगवान का ध्यान करेंगे, जप करेंगे, भगवान हमारे हैं और हम भगवान के हैं ।' - पूज्य बापूजी

भगवत्पाद लीलाशाहजी महाराज

•●● जीवन सार्थक करने के ३ सूत्र ●●•

पढ़ें पृष्ठ ४

तोड़ो और जोड़ो

भीष्मजी ने देह से सत्यता तोड़ दी थी और श्रीकृष्ण से प्रीति जोड़ रखी थी ।

खाली करो और भरो

मन को विकारों व देहाध्यास से खाली करते जाओ और भगवत्प्रीति, भगवद्भाव, भगवद्ध्यान, भगवत्संबंध से भरते जाओ ।

याद करो और भूल जाओ

जो काम करना है उसे याद किया... और किया तो फिर कर्तापन को भूल जाओ ।

३२ हम नहीं कर सके तो ऋषि प्रसाद से हुआ कमाल !

बड़े-बड़े अपराधों से निवृत्त कर पावन करनेवाला व्रत
योगिनी एकादशी : १४ जून २८

२७ गुरुकृपा व दैवी चिकित्सा का हैरतअंगेज करिश्मा

मुर्शिद का दीदार लाखों-करोड़ों हज के बराबर है
- सूफी संत हजरत सुलतान बाहू २६

रोगप्रतिकारक शक्ति का खजाना : स्वास्थ्यप्रद तरबूज के छिलके ३०

ऋषि प्रसाद

हिन्दी, गुजराती, मराठी, ओड़िया, तेलुगु, कन्नड़, अंग्रेजी व बंगाली भाषाओं में प्रकाशित

वर्ष : ३२ अंक : ११ मूल्य : ₹ ७
भाषा : हिन्दी निरंतर अंक : ३६५
प्रकाशन दिनांक : १ मई २०२३
पृष्ठ संख्या : ३६ (आवरण पृष्ठ सहित)
वैशाख-ज्येष्ठ वि.सं. २०८०

स्वामी : संत श्री आशारामजी आश्रम
प्रकाशक : धर्मेश जगराम सिंह चौहान
मुद्रक : राघवेन्द्र सुभाषचन्द्र गादा
प्रकाशन स्थल : संत श्री आशारामजी आश्रम, मोटेरा, संत श्री आशारामजी बापू आश्रम मार्ग, साबरमती, अहमदाबाद-३८०००५ (गुजरात)
मुद्रण स्थल : हरि ॐ मैन्युफेक्चर्स, कुंजा मतरालियों, पाँटा साहिब, सिरमौर (हि.प्र.)-१७३०२५
सम्पादक : श्रीनिवास र. कुलकर्णी
सहसम्पादक : डॉ. प्रे.खो. मकवाणा
संरक्षक : श्री सुरेन्द्रनाथ भार्गव
पूर्व मुख्य न्यायाधीश, सिक्किम; पूर्व न्यायाधीश, राज. उच्च न्यायालय; पूर्व अध्यक्ष, मानवाधिकार आयोग, असम व मणिपुर

कृपया अपना सदस्यता शुल्क या अन्य किसी भी प्रकार की नकद राशि रजिस्टर्ड या साधारण डाक द्वारा न भेजें। इस माध्यम से कोई भी राशि गुम होने पर हमारी जिम्मेदारी नहीं रहेगी। **अपनी राशि मनीऑर्डर या डिमांड ड्राफ्ट ('हरि ओम मैन्युफेक्चर्स' (Hari Om Manufacturers) के नाम अहमदाबाद में देय) द्वारा ही भेजने की कृपा करें।**

सम्पर्क पता : 'ऋषि प्रसाद', संत श्री आशारामजी आश्रम, संत श्री आशारामजी बापू आश्रम मार्ग, साबरमती, अहमदाबाद-३८०००५ (गुज.)
फोन : (०७९) २७५०५०१०-११, ६१२१०८८८
केवल 'ऋषि प्रसाद' पूछताछ हेतु : (०७९) ६१२१०७४२
९५१२०८१०८१ 'Rishi Prasad'
ashramindia@ashram.org
www.ashram.org www.rishiprasad.org

सदस्यता शुल्क (डाक खर्च सहित) भारत में

अवधि	शुल्क
वार्षिक	₹ ७५
द्विवार्षिक	₹ १४०
पंचवार्षिक	₹ ३४०
आजीवन (१२ वर्ष)	₹ ७५०

विदेशों में

अवधि	सार्क देश	अन्य देश
वार्षिक	₹ ६००	US $ 20
द्विवार्षिक	₹ १२००	US $ 40
पंचवार्षिक	₹ ३०००	US $ 80
आजीवन (१२ वर्ष)	₹ ६०००	US $ 200

Opinions expressed in this publication are not necessarily of the editorial board. Subject to Ahmedabad Jurisdiction.

इस अंक में...

- ❖ जीवन सार्थक करने के ३ सूत्र ४
- ❖ आया, बैठा और पा के मुक्त हो गया ५
- ❖ गीता अमृत ✻ ब्रह्मज्ञान क्यों जरूरी है ? ७
- ❖ मंत्र-विज्ञान महाविज्ञान
  - ✻ बाहरी शरीर के साथ आंतरिक शरीर की चिकित्सा करो ११
- ❖ पूज्य बापूजी के जीवन-प्रसंग
  - ✻ कृपा कर दोषों को हटाते, दया कर उत्साह बढ़ाते मेरे गुरुदेव ! १४
- ❖ वास्तविक संजीवनी १७
- ❖ विद्यार्थी संस्कार ✻ गुरुभाई को सताना बना प्रतिबंधक प्रारब्ध १८
  - ✻ माँ का यह वाक्य मैं कभी नहीं भूला ✻ प्रेरक पंक्तियाँ १९
- ❖ तुम संसार में किसलिए आये हो ? २०
- ❖ सद्गुरु के बिना जीव का कल्याण नहीं है २१
- ❖ भजनामृत ✻ प्रियतम दयानिधान ! तुम्हें हम कैसे पायें २१
  - ✻ पूर्ण गुरु की पूजा कीजे - संत टेऊँरामजी २३
- ❖ विवेक दर्पण ✻ कौन-सा सौंदर्य कल्याणकारी ? २२
- ❖ आप भी ऐसे नर-रत्न बन सकते हो २४
- ❖ संतों की हितभरी अनुभव-वाणी २६
- ❖ भक्तों के अनुभव
  - ✻ गुरुकृपा व दैवी चिकित्सा का हैरतअंगेज करिश्मा ! - रिंकु दलाल २७
- ❖ एकादशी माहात्म्य
  - ✻ बड़े-बड़े अपराधों से निवृत्त कर पावन करनेवाला व्रत २८
- ❖ सेवा संजीवनी
  - ✻ अंतिम श्वास तक ऋषि प्रसाद की सेवा करता रहूँगा - शिव कुमार २९
- ❖ स्वास्थ्य संजीवनी
  - ✻ रोगप्रतिकारक शक्ति का खजाना : स्वास्थ्यप्रद तरबूज के छिलके ३०
  - ✻ विशेष लाभदायी स्मृतिशक्तिवर्धक प्रयोग ३१
  - ✻ लू : सुरक्षा व निवारण ३१
- ❖ ऋषि ज्ञान प्रसाद
  - ✻ हम नहीं कर सके तो ऋषि प्रसाद से हुआ कमाल ! ३२
- ❖ अनमोल कुंजियाँ
  - ✻ पातकनाशक व महान फलदायी विजया सप्तमी ३३
  - ✻ घर में सुख-समृद्धि की वृद्धि हेतु ३३
  - ✻ विद्यालाभ व अद्भुत विद्वत्ता की प्राप्ति हेतु ३३
- ❖ सब रोगों में लाभकारी सर्वसुलभ महौषधि ३४

विभिन्न चैनलों पर पूज्य बापूजी का सत्संग

अनादि
रोज सुबह ६:३० व रात्रि ११ बजे टाटा स्काई/प्ले (चैनल नं. ११७०) व म.प्र., छ.ग., उ.खं. के विभिन्न केबल

DIGIANA DIVYA JYOTI
रोज रात्रि १० बजे म.प्र. में 'डिजियाना' केबल (चैनल नं. १०९)

Asharamji Bapu

सेवाकार्य भी
Asharamji Ashram

Mangalmay Digital

आश्रम के आधिकारिक यूट्यूब चैनल्स

डाउनलोड करें : Rishi PrasadApp (ऋषि प्रसाद की ऑनलाइन सदस्यता हेतु), Rishi Darshan App (ऋषि दर्शन विडियो मैगजीन की सदस्यता हेतु) एवं Mangalmay DigitalApp

ब्रह्मज्ञान क्यों जरूरी है ?

– पूज्य बापूजी

सारे सुख-दुःख छू हो जायेंगे

अध्यात्मज्ञान की कमी के कारण ही सारे दुःख, सारे संघर्ष, सारी समस्याएँ, बेचैनी और अशांति उत्पन्न होती है ।

अध्यात्मज्ञाननित्यत्वं तत्त्वज्ञानार्थदर्शनम् ।
एतज्ज्ञानमिति प्रोक्तमज्ञानं यदतोऽन्यथा ॥

'अध्यात्मज्ञान में निष्ठा (नित्य स्थिति) होना और तत्त्वज्ञान के प्रयोजन का विचार करना (अर्थात् तत्त्वज्ञान के अर्थरूप परमात्मा को ही देखना) – यह सब ज्ञान कहा जाता है, इससे जो भिन्न है वह अज्ञान है ।' **(गीता : १३.११)**

आत्मज्ञान में नित्य स्थिति और तत्त्वज्ञान (आत्म-परमात्म ज्ञान) के अर्थ को समझना यह ज्ञान है और इससे विपरीत जो है वह अज्ञान है । खंड-खंड को समझना यह अज्ञान है लेकिन खंड-खंड में जो अखंड छुपा है उसको समझना, एक-एक में आसक्त होने की अपेक्षा अनेक में जो एक है उसको जानना – यह ज्ञान है... फिर न पकड़ना है न छोड़ना है । तो फिर महाराज ! खायेंगे क्या, कमायेंगे क्या ? उस ज्ञान में टिके तो खाना-कमाना स्वाभाविक होता रहेगा ।

जरा-जरा बात पर हृदय घबरा जाता है, कुढ़ता है; कुछ कर्म करने से पाप लगता है, कुछ कर्म करने से पुण्य लगता है; पुण्य की जंजीरें स्वर्ग में घसीट के ले जाती हैं, पाप की जंजीरें नरक में घसीट के ले जाती हैं फिर वह पूरा होता है तो विधि की जंजीरें उठाकर किसी गर्भ में फेंक देती हैं – यह सब ब्रह्मज्ञान के अभाव के कारण होता है ।

जैसे आपने सपना देखा । सपने में आप सेठ बन गये और पैसे बहुत हो गये । आयकर (इनकम टैक्स) का टेंशन हो गया और छापा पड़ा । आप घबराये, बीमार हुए... बेटा लोफर हो गया, आप दुःखी हुए किंतु आँख खुली तो देखा कि 'बेटा भी मेरी चेतना थी, आयकरवाला भी मेरी चेतना थी, रुपये कमाये वह भी मेरी चेतना थी और आयकरवाले रुपये ले गये सपने में तो भी मैं ही था ।' आँख खुलते ही सपने के सुख-दुःख छू हो गये । ऐसे ही तत्त्वज्ञान होते ही इस संसार के सुख-दुःख छू हो जायेंगे, अपना ज्ञान-प्रकाश, परमानंद, परम सुख रहेगा ।

...तो नित्य नवीन ज्ञान उभरेगा

भगवान शिवजी को तत्त्वज्ञान का आनंद है, ध्यान करते-करते तत्त्व में टिके हुए हैं । भगवान विष्णु क्षीरसागर में अपने आत्मस्वरूप में शांत हैं । भगवान ब्रह्माजी इसी तत्त्वज्ञान में समाधिस्थ रहते हैं और फिर संकल्प से सृष्टि बनाने का सामर्थ्य पाते हैं ।

सुबह, दोपहर, शाम को थोड़े दिन ध्यान में, इस आत्मशांति में शांत होते रहो तो आपकी कार्यक्षमता बढ़ती जायेगी, समझ, सुख, योग्यता बढ़ते जायेंगे और नित्य नवीन ज्ञान उभरता जायेगा । जो तत्त्वज्ञान, आत्मज्ञान में प्रतिष्ठित है उसको ज्ञान पाने के लिए किताबें रटनी नहीं पड़ती हैं, उसका नित्य नवीन ज्ञान उभरता रहता है । उसको खुशी के लिए चिकनपार्टी, डिस्को डांस या पॉप म्यूजिक आदि की गुलामी नहीं करनी पड़ती है, उसका सुख अपने-आप छलकता है । उसको आरोग्य के लिए टॉनिकें नहीं लेनी पड़ती हैं, उसका नित्य नवीन सुख उसके कण-कण में आरोग्यता उभारता है ।

बाहरी शरीर के साथ आंतरिक शरीर की चिकित्सा करो

इसके बिना पूर्ण स्वस्थता सम्भव नहीं

– पूज्य बापूजी

रोग २ शरीरों में होते हैं – बाह्य शरीर में और आंतरिक शरीर (मनःशरीर, प्राणशरीर) में । उपचार बाहरी शरीर के होते हैं और रोग मनःशरीर, प्राणशरीर में होते हैं । आंतरिक शरीर का इलाज नहीं हुआ तो रोग पूर्णरूप से ठीक नहीं होता और लम्बे समय तक रहता है । 'मलेरिया ठीक हो गया...' फिर से मलेरिया हो जाता है । ऐसे ही कई बीमारियाँ थोड़ी ठीक हुईं लेकिन फिर दूसरा रूप ले लेती हैं, २-५ साल में फिर से उभर आती हैं । कइयों को दवाइयों के रिएक्शन (दुष्प्रभाव) भी होते हैं । तो आंतरिक शरीर को रोग तोड़ देता है और चिकित्सा बाहर के शरीर की होती है इसलिए वे प्रयास विफल हो जाते हैं ।

वैद्यों और डॉक्टरों को केवल बाहरी शरीर का ज्ञान है अतः वे केवल बाहरी शरीर की चिकित्सा करते हैं या औषधि के द्वारा बाहरी शरीर को ही स्वस्थ करने का प्रयत्न करते हैं जबकि चिकित्सा आंतरिक शरीर की करना अनिवार्य है । रोग सीधे आंतरिक शरीर को जकड़ता है । **पूर्णतः रोगमुक्त होने के लिए औषधि पूर्ण उपाय नहीं है अपितु पूर्ण स्वस्थता तो वैदिक मंत्रों के द्वारा ही सम्भव है ।**

यजुर्वेद और अथर्ववेद में विविध रोगों की निवृत्ति के लिए चिकित्सा के विविध उपाय, मंत्र एवं विधियाँ बतायी गयी हैं । अमुक-अमुक रोग के लिए अमुक-अमुक मंत्र जपो या निरंतर श्रवण करो तो ऐसे आंदोलन पैदा होंगे जिनसे प्राणशरीर, मनःशरीर स्वस्थ हो जायेंगे तो व्यक्ति पुनः स्वस्थ हो जायेगा । **६ महीने औषधियों का उपयोग करने से जो काम होता है वह मंत्रध्वनि से ६ दिन में हो सकता है ।**

यह मंत्र मूल पर असर करेगा, त्रिदोषों को हर लेगा

कुछ मंत्र समस्त व्याधियों को समाप्त करने में समर्थ हैं फिर चाहे वे व्याधियाँ पित्त-संबंधी हों, चाहे वात या कफ संबंधी । वायु से ८० प्रकार की, पित्त से ४० प्रकार की और कफ से २० प्रकार की बीमारियाँ बनती हैं । इनमें से २-२ दोषों की एक साथ विकृति से भी अन्य अनेक प्रकार की बीमारियाँ बनती हैं ।

ऐसे ही छोटी-मोटी कई बीमारियाँ बन जाती हैं पर सभी बीमारियों की जड़ है – वात, पित्त व कफ का असंतुलन । और मंत्र इसी जड़ पर असर कर दे तो बस, हो गया संतुलन !

वात-पित्त-कफ के असंतुलन से होनेवाली सभी बीमारियों को इस विशिष्ट मंत्र से दूर किया जा सकता है । मंत्र है:

त्र्यम्बकं यजामहे ऊर्वारुकमिव स्तुता वरदा प्र चोदयन्ताम् ।
आयुः प्राणं प्रजां पशुं ब्रह्मवर्चसं मह्यं दत्त्वा व्रजत ब्रह्मलोकम् ॥

यह ३ मंत्रों का समन्वित स्वरूप है और

विद्यार्थी संस्कार

गुरुभाई को सताना बना प्रतिबंधक प्रारब्ध

– पूज्य बापूजी

अष्टावक्र मुनि ने राजा जनक को उपदेश दिया और उनको आत्मसाक्षात्कार हुआ यह तो सुना-पढ़ा होगा लेकिन राजा जनक और अष्टावक्र मुनि के पूर्वजन्म का वृत्तांत भी बड़ा रोचक और बोधप्रद है ।

राजा जनक पूर्वजन्म में किन्हीं ऋषि के शिष्य थे । अष्टावक्रजी और जनक – दोनों गुरुभाई थे । अष्टावक्रजी को योग मार्ग में रुचि थी और जनक को ज्ञान मार्ग में रुचि थी । कोई साधक विचार-प्रधान होता है तो कोई ध्यान-प्रधान होता है; अष्टावक्रजी ध्यान-प्रधान थे और अन्य शिष्य विचार-प्रधान थे ।

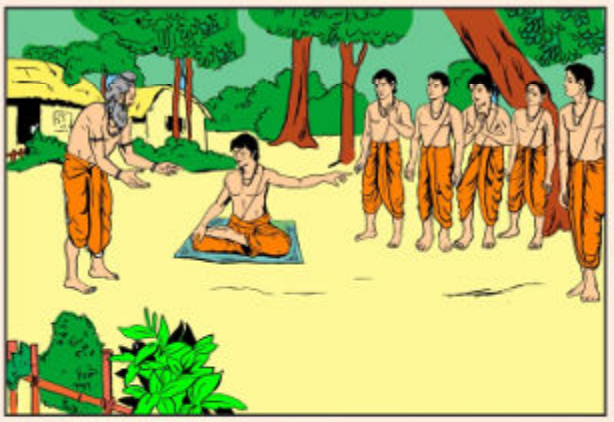

एक बार गुरु कहीं बाहर गये थे तो ये विचार-प्रधान शिष्यगण जो अपने को बुद्धिशाली मानते थे, उन्होंने अष्टावक्रजी का खूब मजाक उड़ाया, उनके साथ खूब छेड़खानी की । वे बेचारे घबरा गये, रो पड़े ।

गुरुजी जब आये तो उन्हें रोता हुआ देखकर पूछा : ''बेटा ! क्या बात है ?''

जनक उम्र में बड़े शिष्य थे । जनक की तरफ उँगली करके अष्टावक्रजी ने कहा कि ''ये लोग मुझे सताते हैं कि 'यह तो सिर्फ प्राणायाम करता है, ध्यान करता है, बड़ा योगी आ गया...' ऐसा करके मेरी खूब मसखरी करते हैं । गुरुजी ! आपको क्या निवेदन करूँ, मेरे को कई महीनों से परेशान करते हैं ।''

गुरुजी ने जनक से कहा : ''तुम इसको छोटा गुरुभाई समझ के इतना सताते हो और अपने को बड़ा विद्वान व ज्ञानी मानते हो तो कान खोल के सुन लो कि इसकी कृपा के बिना तुमको आत्मसाक्षात्कार नहीं होगा । आखिर इसकी शरण जाओगे तभी तुम्हें ज्ञान होगा ।''

गुरु का शाप प्रतिबंधक प्रारब्ध बन गया । जनक ने पूर्वजन्म में आत्मविचार तो किया था, ज्ञान तो सुना था परंतु आत्मसाक्षात्कार नहीं हुआ । सुने हुए ज्ञान का फल हुआ कि अगले जन्म में वह राजा जनक बन गया और किये हुए योग व सुने हुए ज्ञान का फल हुआ कि अगले जन्म में अष्टावक्रजी को माता के गर्भ में 'स्व'स्वरूप की अनुभूति हुई ।

अष्टावक्रजी के पिता कहोड ब्राह्मण वेद पढ़े थे । एक दिन पत्नी सुजाता के आगे वेद का रहस्य बता रहे थे । सुजाता के गर्भ में जो बालक था वह बोला : ''आप जो वेद-पाठ करते हैं वह शुद्ध उच्चारण पूर्वक नहीं हो पाता । और आप जो बता रहे हैं वे वेद के केवल शब्द हैं, वेद का रहस्य तो परम मौन है (मन और वाणी से परे है) । वेद का रहस्य, वेद का अमृत वेद-पाठ से नहीं मिलता; पाठ करते-करते जहाँ से पाठ करने का स्फुरण होता है उसमें विश्रांति पाने से

आप भी ऐसे नर-रत्न बन सकते हो - पूज्य बापूजी

बाल गंगाधर तिलक ५वीं कक्षा में पढ़ते थे तब की बात है। एक बार कक्षा में किसी बच्चे ने मूँगफली खायी और छिलके वहीं फेंक दिये। अंग्रेज शासन था, हिन्दुस्तानियों को डाँट-फटकार के, दबा के रखते थे। मास्टर आया और रुआब मारते हुए बोला : ''किसने मूँगफली खायी ?''

कोई भी लड़का बोला नहीं तो मास्टर ने कहा : ''सभी लड़के हाथ सीधा रखें और इधर आयें।'' और वह २-२ फुटपट्टियाँ मारने लगा। सब बच्चे मार खाने लगे। बाल गंगाधर की भी बारी आयी, मास्टर बोला : ''हाथ सीधा करो।''

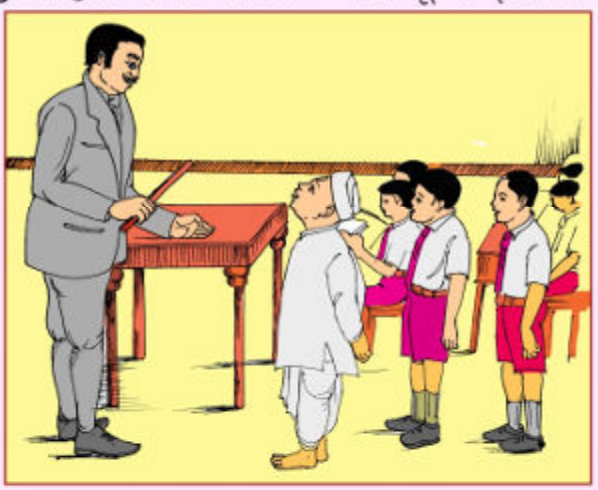

तिलक : ''मैंने मूँगफली नहीं खायी तो मार भी नहीं खाऊँगा।''

सब बच्चे देखने लगे कि 'हमने तो डर के मार खायी और यह बोलता है कि 'मैंने मूँगफली नहीं खायी तो मार भी नहीं खाऊँगा' और हिम्मत से खड़ा है !'

हिम्मतवाला होना अच्छा है न ?

तो मास्टर गुस्सा हुआ और बाल गंगाधर को डाँटने लगा किंतु वे मास्टर की डाँट से दबे नहीं। मास्टर ने कहा : ''क्यों, डर नहीं लगता ?''

''मैं झूठ बोलता नहीं, मैंने मूँगफली खायी नहीं तो मैं क्यों डरूँगा, मार क्यों खाऊँगा ?''

''किसने मूँगफली खायी बताओ तो ?''

''मैं चुगली नहीं करता। **झूठ बोलने से मन कमजोर होता है, चुगली खाने से वैर बनता है, ज्यादा बोलने से शक्ति का ह्रास होता है।** मैं तो सूर्यनारायण को अर्घ्य देता हूँ, तुलसी के पत्ते खाता हूँ। और मेरी माँ ने मेरे जन्म के पहले सूर्यनारायण की उपासना की थी और वह इसलिए कि 'मेरे को तेजस्वी बालक हो, जो अंग्रेजों के जुल्म से लोहा ले।' तो मैं तो भारत को आजाद कराने की सेवा में लगनेवाला हूँ। मेरी माँ की जैसी भावना है वैसे ही मेरे अंदर सद्भाव आ रहे हैं। तो मैं काहे को तुम्हारे आगे दब्बू बनूँगा ?''

''तुम्हारा इतना हिम्मत ! शट-अप ! शट थर्टी टू ! (अपनी बत्तीसी बंद करो ! मुँह बंद करो।)''

बोले : ''हम काहे को बंद करें ? **डरता तो वह है जो जुल्म करता है। हम तो जुल्म करते नहीं तो जुल्मियों से डरेंगे काहे को ?''**

तो मास्टर को गुस्सा आया, हाथ पकड़ के स्कूल के बाहर कर दिया। बाल गंगाधर तिलक ने जाकर अपने पिता को बताया कि ऐसा-ऐसा हुआ था।

उनके पिता दूसरे दिन आये, बोले : ''हमारे बेटे ने झूठ बोला नहीं, मूँगफली खायी नहीं और वह चुगली काहे को खायेगा ? और तुम इसको दबाना चाहते हो परंतु मेरा बेटा दब्बू नहीं है। **जो झुक के बैठते हैं और माँ-बाप को सताते हैं या माँ-बाप का आशीर्वाद नहीं लेते वे दब्बू बनते हैं। यह तो अपने माँ-बाप को प्रणाम करता है, शिक्षकों का भी आदर करता है।** लेकिन कोई रुआब मार के जबरदस्ती इससे चुगली कराये तो इसने चुगली नहीं की, इसमें तो मेरा बेटा निर्दोष है।''

सारे शिक्षकों ने बात मानी कि 'बाल गंगाधर

बड़े-बड़े अपराधों से निवृत्त कर पावन करनेवाला व्रत

– पूज्य बापूजी

एकादशी का व्रत भगवान के नजदीक ले जानेवाला है । युधिष्ठिर ने भगवान श्रीकृष्ण से पूछा : ''प्रभु ! आषाढ़ (अमावस्यांत मास अनुसार ज्येष्ठ) मास के कृष्ण पक्ष की एकादशी का नाम क्या है ? उसके विषय में जानना चाहता हूँ ।''

श्रीकृष्ण ने कहा : ''इस एकादशी का नाम 'योगिनी' है । संसार-सागर में डूबे हुए प्राणियों के लिए यह सनातन नौका के समान है । यह पापों के समूहों का नाश करती है, बुद्धि में विलक्षण योग्यता देती है और मनोवांछित फल देने में सक्षम है ।

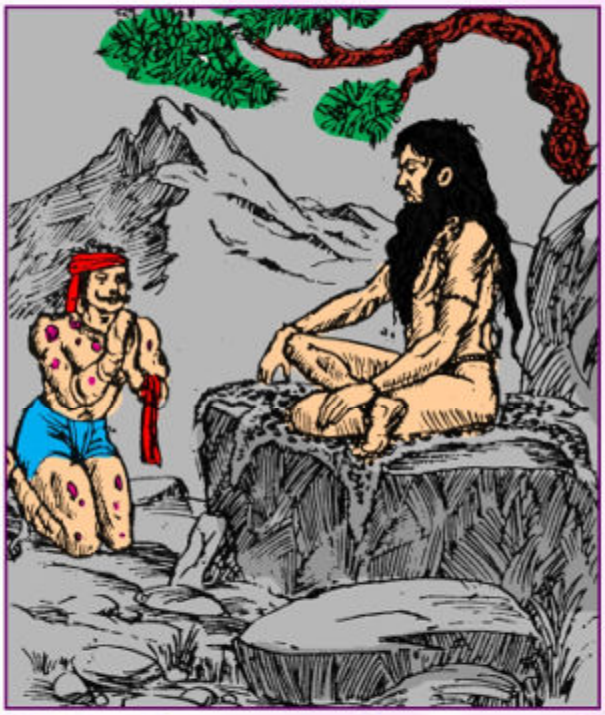

योगिनी एकादशी : १४ जून

अलकापुरी के कुबेर प्रतिदिन भगवान साम्बसदाशिव का पूजन और ध्यान करते थे । कुबेर का सेवक हेममाली नाम का यक्ष उनके लिए पूजा हेतु फूल लाता था । हेममाली को अपनी पत्नी विशालाक्षी में बड़ी आसक्ति थी ।

एक बार हेममाली मानसरोवर से फूल लेने गया लेकिन कुबेर के पास पहुँचने के बदले बीच में अपनी पत्नी के सहवास में इतना तो रत हो गया कि कुबेर को फूलों की बाट देखते-देखते दोपहर हो गयी । पूजा का समय व्यतीत होने पर यक्षराज कुबेर ने कुपित होकर सेवकों से पूछा : ''यक्षो ! दुरात्मा हेममाली अभी तक क्यों नहीं पहुँचा ?''

यक्षों ने कहा : ''वह इधर आते-आते अपने घर चला गया, उसका अपनी पत्नी में बड़ा मोह है ।''

कुबेर जान गये कि 'पत्नी के साथ काला मुँह करने गया तो फिर इधर समय पर फूल कैसे लाये ?'

कुबेर ने अनुचरों को कहा : ''जाओ, उस अधम, पापी को पकड़ के ले आओ !''

देर हुई जानकर हेममाली के नेत्र भय से व्याकुल हो रहे थे । वह आकर कुबेर के सामने खड़ा हो गया । उसे देखकर कुबेर ने शाप दिया : ''ओ पापी ! अरे दुष्ट ! ओ दुराचारी ! तूने भगवान की अवहेलना की इसलिए जा, तेरे शरीर को कोढ़ घेर ले और तू अभी-अभी अलकापुरी से गिरकर पिशाच की नाईं भटक !''

कुबेर का इतना कहना था कि यक्ष हेममाली कोढ़ से घिर गया और अलकापुरी से पतित हुआ । उस समय उसके हृदय में बड़ा दुःख हो रहा था । कोढ़ से सारा शरीर पीड़ित था परंतु शिव-पूजा हेतु मिली सेवा के प्रभाव से उसकी स्मरणशक्ति लुप्त नहीं हुई । पातक से दबा होने पर भी उसे अपने पूर्वकर्मों की स्मृति थी ।

भटकते-भटकते मेरुगिरि पर्वत के शिखर पर गया । वहाँ मार्कंडेय ऋषि पर दृष्टि पड़ी और दुःख व पीड़ा के कारण उन्हें खूब-खूब प्रणाम करते हुए प्रार्थना करने लगा । तब मार्कंडेय ऋषि ने पूछा : ''तेरी ऐसी गंदी स्थिति

हम नहीं कर सके तो ऋषि प्रसाद से हुआ कमाल !

मैं हर वर्ष 'मातृ-पितृ पूजन दिवस' के प्रचार की सेवा करता हूँ । इस वर्ष की १४ फरवरी से पहले हम कुछ साधक एक विद्यालय में गये लेकिन प्रधानाचार्याजी के न मिलने से कार्यक्रम नहीं हो पाया । हम उनकी सहयोगी अध्यापिका को ऋषि प्रसाद देकर आ गये ।

१४ फरवरी के बाद फिर से गये तो भी प्रधानाचार्याजी नहीं मिलीं । उनकी सहयोगी अध्यापिका से मातृ-पितृ पूजन कार्यक्रम हेतु समय माँगा तो वे बोलीं : ''आपने जो पत्रिका दी थी उसमें इस दिवस के बारे में पढ़ा तो बहुत अच्छा लगा । माता-पिता के पूजन की विधि भी पढ़ी । हमने १४ फरवरी को अभिभावकों को बुला के यह कार्यक्रम करवा लिया । बहुत ही सुंदर पहल है यह, सभीको बड़ा आनंद आया ।'' उन्होंने कार्यक्रम के विडियो व तस्वीरें भी दिखायीं ।

कुछ क्षणों के लिए तो मैं दंग रह गया फिर हुआ कि 'गुरुदेव की कृपाशक्ति कितनी समर्थ है जो 'ऋषि प्रसाद' के माध्यम से विद्यालय-प्रबंधन को इतनी सबल सत्प्रेरणा दे गयी कि केवल पत्रिका में पढ़ के ही इन्होंने इतना सुंदर एवं भव्य कार्यक्रम आयोजित कर डाला !' मुझे लगा कि यह 'ऋषि प्रसाद' रूपी सद्ग्रंथ भावी भारत एवं पूरे विश्व का मंगलमय संविधान बनकर घर-घर पूजा जायेगा और इसके आधार पर प्रसन्न व मधुमय व्यक्तिगत जीवन, प्रेम व सौहार्द सम्पन्न परिवार व **'परस्परं भावयन्तु'** की दिव्य भावना से ओतप्रोत सुंदर समाज का निर्माण होगा । भारत देश विश्वगुरु के पद पर पुनः आसीन होकर पूरे विश्व को स्वस्थ, सुखी एवं सम्मानित जीवन का पथ-प्रदर्शन करेगा । **'सत्यं शिवं सुन्दरम्'** की अवधारणा केवल किताबों में पढ़ने एवं रटारटी का विषय नहीं बनेगी अपितु जन-जन के जीवन में से फूट निकलेगी ।

ऋषि प्रसाद मेरे लिए अब केवल एक आदरणीय पत्रिका नहीं रही, अब यह मेरे लिए सुंदर समाज के निर्माण का पावन, पूजनीय शिक्षा-ग्रंथ हो गया है । हे ऋषि-देश के वासियो और विश्ववासियो ! यह सुखमय वर्तमान और उज्ज्वल भविष्य की कल्याणमय आचार-संहिता है । हम सबको ऋषि प्रसाद को बड़े सम्मानपूर्वक पढ़ना चाहिए और लोगों तक इसका ज्ञान पहुँचाने की सेवा करते हुए पूज्य बापूजी के विभिन्न दैवी कार्यों से भी लाभान्वित होना चाहिए । अब मेरी समझ में आ गया है कि इसमें हमारा प्रयत्न तो नाममात्र का है, गुरुदेव की अदृष्ट कृपा हमारे एवं अन्य अनंत हाथों, मतियों व अनंत हृदयों से अपना कार्य करवा रही है । वह अपनी अचिंत्य शक्ति से कइयों के जीवन को खुशहाल करती रहती है, हमें तो केवल सेवा के पथ पर अपना पग आगे बढ़ा के अपनी ईश्वरप्रदत्त योग्यता का सदुपयोग कर अपना दायित्व निभाते हुए अपना ही जीवन धन्य बनाना है ।

- उमेश बिजेगावकर
सचल दूरभाष : ९७०३०३०५९७

सेवा

नोटबुक व रजिस्टर

कम मूल्य, उच्च गुणवत्ता व आकर्षक डिजाइन के साथ सुसंस्कारों की सुंदर अभिव्यक्ति

क्या है इनमें खास ?

✲ संयम, सदाचार, आत्मज्ञान, भक्ति, उद्यम, कर्तव्यपालन आदि सद्गुणों से जीवन को ओतप्रोत करनेवाले पूज्य बापूजी के सत्संग-वचनामृत ✲ हर पृष्ठ पर प्रेरणादायी सुवाक्य, जो विद्यार्थियों को आत्मविश्वास, माता-पिता व गुरुजनों के प्रति आदरभाव आदि सुसंस्कारों से भर दें ✲ मनोबल, बुद्धिबल व स्वास्थ्यबल बढ़ाने के सचोट उपाय ✲ एकाग्रता व स्मरणशक्ति बढ़ाने की कुंजियाँ ✲ परीक्षा में सफल होने के उपाय ✲ चित्त में प्रसन्नता, उत्साह, आनंद व जीवनीशक्ति वर्धक दृश्य, तस्वीरें तथा सांस्कृतिक प्रतीक ।

विद्यार्थियों को इन नोटबुकों से सहज में ही मिलेंगे सुसंस्कार व सही दिशा ।
आम नोटबुकों पर छपनेवाली जीवनीशक्ति-विनाशक सामग्री से कोमलचित्त बच्चों को बचायें ।

लाँग नोटबुक ९६ पेज	₹ २०	लाँग नोटबुक २४८ पेज	₹ ६५	A4 लाँग रजिस्टर १९६ पेज	₹ ७५
लाँग नोटबुक १२८ पेज	₹ ३०	A4 लाँग रजिस्टर ९६ पेज	₹ ३५	A4 लाँग रजिस्टर २९२ पेज	₹ ११०
लाँग नोटबुक १७६ पेज*	₹ ४५	A4 लाँग रजिस्टर १६० पेज	₹ ६०	A4 लाँग रजिस्टर ३८८ पेज	₹ १५०

✲ 'लाँग नोटबुक १७६ पेज' 2 Line, 4 Line, Square व 3 in 1 में भी उपलब्ध है ।

सम्पर्क : (०७९) ६१२१०७३२ (साहित्य विभाग) Visit: https://asharamjibapu.org/notebooks

दंत सुरक्षा टूथपेस्ट

यह आपके दाँतों को सम्पूर्ण सुरक्षा प्रदान करता है । दाँतों को साफ करता है एवं मसूड़ों को मजबूत करता है । इसका सप्ताह - दो सप्ताह उपयोग करने से मसूड़ों की सूजन, मसूड़ों से खून निकलना, दाँतों का दर्द, दाँतों का हिलना, दाँतों की सड़न आदि दंत-रोगों से रक्षा होती है ।

₹ ४०
१०० ग्राम

एलोवेरा जेल

यह त्वचा को कोमल बनाता है और उसमें निखार लाता है । त्वचा की कील-मुँहासे, काले दाग-धब्बे व झुर्रियों से रक्षा करता है । यह रूखी व तैलीय त्वचा - दोनों के लिए हितकारी है । त्वचा को हानिकारक किरणों व प्रदूषण से बचाता है ।

गर्मी से राहत दिलानेवाले स्वास्थ्यवर्धक शरबत

हर घूँट में मधुरता व शक्ति का एहसास

गुलाब शरबत : सुमधुर, जायकेदार, शारीरिक व मानसिक थकावट को मिटानेवाला । **पलाश शरबत :** जलन, प्यास आदि में लाभदायक, गर्मी सहने की शक्ति बढ़ानेवाला । **ब्राह्मी शरबत :** स्मरणशक्तिवर्धक, दिमाग को शांत व ठंडा रखने में सहायक ।

उपरोक्त सामग्री संत श्री आशारामजी आश्रमों में सत्साहित्य सेवा केन्द्रों से तथा समितियों से प्राप्त हो सकती है । अन्य उत्पादों व उनके लाभ आदि की विस्तृत जानकारी के लिए एवं घर बैठे रजिस्टर्ड पोस्ट द्वारा सामग्री-प्राप्ति हेतु गूगल प्ले स्टोर से डाउनलोड करें : "Ashram eStore" App या विजिट करें : www.ashramestore.com या सम्पर्क करें : (०७९) ६१२१०७६९. ई-मेल : contact@ashramestore.com

युवाओं तथा युवा पीढ़ी के हितैषियों के लिए सुनहरा अवसर !

'दिव्य प्रेरणा-प्रकाश' पुस्तक युवाओं के लिए वरदान है। निम्न प्रकल्पों द्वारा इसे युवाओं तक पहुँचाने की सेवा में सहभागी हो आप निभा सकते हैं घर-परिवार, समाज व राष्ट्र के हित में महत्त्वपूर्ण भूमिका !

RNI No. 48873/91
RNP. No. GAMC 1132/2021-23
(Issued by SSPOs Ahd, valid upto 31-12-2023)
Licence to Post without Pre-payment.
WPP No. 08/21-23
(Issued by CPMG UK. valid upto 31-12-2023)
Posting at Dehradun G.P.O. between 1st to 17th of every month.
Date of Publication: 1st May 2023

* युवाधन सुरक्षा अभियान (अब नये रूप में)
* तेजस्वी युवा अभियान * जिला-स्तरीय 'तेजस्वी युवा शिविर'

सम्पर्क : युवा सेवा संघ मुख्यालय, संत श्री आशारामजी आश्रम, अहमदाबाद।
दूरभाष : (०७९) ६१२१०७६१, ६१२१०८८८ विस्तृत जानकारी हेतु स्कैन करें QR कोड :

रायता में सेवा साधना अनुष्ठान शिविर, माला-पूजन व ऋषि प्रसाद सम्मेलन

करोलबाग आश्रम, दिल्ली में माला-पूजन व ऋषि प्रसाद सम्मेलन

नाशिक में माला-पूजन व ऋषि प्रसाद सम्मेलन

जगह-जगह हो रहीं ऋषि प्रसाद ज्ञान प्रतियोगिताएँ, मिल रहे आकर्षक पुरस्कार

नागपुर

विक्रांत काले | विभा पिसालकर | वर्षा केशवानी | गौरी आसवर | चाँदनी आसवानी

पुणे

ओमकार गदगे | रेवणसिद्ध गदगे | राजेश सचदेव

वडोदरा

निखिल भगत | ऋषि अमिन | सलिल विश्वकर्मा | कृष्णा महीडा | पीनल पटेल

पुणे | पटना

इंदिरा बोन्द्रे | अनिल अम्बिके | विकास कुमार

इस प्रतियोगिता में भाग लेने हेतु RPGP - Rishi Prasad एप इंस्टॉल करने के लिए स्कैन करें यह QR कोड
आपके क्षेत्र में भी प्रतियोगिताएँ आयोजित हो रही हैं, जिनकी तारीख हेतु सम्पर्क करें ऋषि प्रसाद के क्षेत्रीय कार्यालय या मुख्यालय का।

अयोध्या में रामनवमी पर बाल संस्कार सेवाधारी शिविर, साहित्य व शरबत वितरण

स्थानाभाव के कारण सभी तस्वीरें नहीं दे पा रहे हैं। अन्य अनेक तस्वीरों हेतु वेबसाइट www.ashram.org/sewa देखें।

आश्रम के मासिक प्रकाशन ऋषि प्रसाद, ऋषि दर्शन व लोक कल्याण सेतु की सदस्यता हेतु स्कैन करें : Rishi Prasad | Rishi Darshan | Lok Kalyan Setu

स्वामी : संत श्री आशारामजी आश्रम प्रकाशक : धर्मेश जगराम सिंह चौहान मुद्रक : राघवेन्द्र सुभाषचन्द्र गादा प्रकाशन-स्थल : संत श्री आशारामजी आश्रम, मोटेरा, संत श्री आशारामजी बापू आश्रम मार्ग, साबरमती, अहमदाबाद-३८०००५ (गुजरात) मुद्रण-स्थल : हरि ॐ मैन्युफेक्चरर्स, कुंजा मतरालियों, पौंटा साहिब, सिरमौर (हि.प्र.)-१७३०२५ सम्पादक : श्रीनिवास र. कुलकर्णी